International Journal of Sanskrit Research 2021; 7(1): 395-398

International Journal of Sanskrit Research

अनन्ता

ISSN: 2394-7519
IJSR 2021; 7(1): 395-398
© 2021 IJSR
www.anantaajournal.com
Received: 22-10-2020
Accepted: 25-12-2020

डॉ. चिरश्री मुखर्जी
सहायक अध्यापिका, रामानन्द कॉलेज, विष्णुपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

Corresponding Author:
डॉ. चिरश्री मुखर्जी
सहायक अध्यापिका, रामानन्द कॉलेज, विष्णुपुर, पश्चिम बंगाल, भारत

भारतीय भाषाएं और देवनागरी लिपि

डॉ. चिरश्री मुखर्जी

सारांश
देवनागरी लिपि में अनेक भारतीय भाषाएँ लिखी जाती हैं। अतः यह निबंध विभिन्न भारतीय भाषाओं के साथ देवनागरी लिपि के संबंध पर प्रकाश डालने का प्रयास करेगा। साथ ही देवनागरी लिपि की विशेषताओं और क्षमताओं पर भी प्रकाश डाला जाएगा।

कूटशब्द: देवनागरी, लिपि, ब्राह्मी, भारतीय भाषा, अल्पप्राण, महाप्राण, अनुनासिकता, संस्कृत भाषा, व्यंजन ध्वनि

प्रस्तावना
देवनागरी जिसे नागरी लिपि भी कहा जाता है, ब्राह्मी लिपि की सर्वाधिक व्यापक, विकसित और वैज्ञानिक लिपि है। साथ ही यह सम्पर्क लिपि का भी कार्य कर सकती है क्योंकि यह भारत की अन्य भाषाओं की सहोदर लिपि है। भारत के अनेक अग्रणी नेताओं, विचारकों और भाषाविदों का यह मानना है कि देवनागरी लिपि भारत को एकसूत्र में बांधने में सहायक हो सकती है। उनका विचार है कि भारत की भावात्मक एकता की दृष्टि से भारतीय भाषाओं के लिए एक लिपि का होना श्रेयस्कर है। इसके लिए देवनागरी लिपि सर्वोत्तम है। इन मनीषियों में श्री केशववामन पेठे, राजा राम मोहन राय,शारदाचरण मित्र, (१८४८-१९१६), लोकमान्य तिलक, गांधी जी, महर्षि दयानंद सरस्वती, कृष्ण स्वामी अय्यर, अनन्त शयनम् अयंगर, मुहम्मद करीम छागला ने देवनागरी लिपि के प्रचार प्रसार के लिए अपना महत्वपूर्ण योगदान दिया।
महात्मा गांधी के अनुसार "लिपि विभिन्नता के कारण प्रान्तीय भाषाओं का ज्ञान आज असम्भव सा हो गया है। बांग्ला लिपि में लिखी हुई गुरुदेव की गीतांजलि को सिवाय बंगालियों के और कौन पढ़ेगा पर यदि वह देवनागरी में लिखी जाए तो उसे सभी लोग पढ़ सकते हैं।"
दक्खिनी हिंदी का ४०० वर्ष पुराना साहित्य फारसी लिपि में होने के कारण हिन्दी शोधकर्ताओं की दृष्टि से लगभग विलुप्त हो चुका है। यदि इस साहित्य को हिंदी साहित्य जगत में लाना है तो लिपिभेद को समाप्त करना होगा। इस ही प्रकार यदि उर्दू भाषा साहित्य को देवनागरी लिपी में लिखा जाए तो इसका अधिक प्रसार संभव हो सकेगा।
देवनागरी लिपि का उल्लेख सर्वप्रथम ४५३ ई. के जैन ग्रंथो में मिलता है। कुछ भाषाविदों का मत है कि नगरों में प्रयुक्त होने के कारण इसका नाम 'नागरी लिपि' पड़ा। काशी में प्रचलित होने के कारण इसे 'देवनागरी' नाम प्राप्त हुआ। नवीं दसवीं शताब्दी तक ये उस स्वरूप में विकसित हो चुकी थी जो आज वर्तमान में है।
यह 'अक्षरात्मक' लिपि है तथा विश्व में प्रचलित अन्य लिपियों की अपेक्षा अधिक परिष्कृत और पूर्णतर है। इसे सर्वोत्तम भी माना जा सकता है क्योंकि इसका लिखित और उच्चारित रूप एक ही है। इस दृष्टि से इसे सीखना, लिखना और पढ़ना सरल है। यह एक वैज्ञानिक रूप से विकसित और विन्यासित भाषा है। इस लिपि में अनेक भारतीय भाषाएं और विदेशी भाषाएं लिखी जाती हैं। संस्कृत, पाली, हिन्दी, गुजराती, मराठी, कश्मीरी, कोंकणी, सिंधी, गढ़वाली, भोजपुरी, मैथली, संथाली, इत्यादि, भारत और एशिया की अनेक लिपियों के वर्ण क्रम ब्राह्मी लिपि से उत्पन्न होने के कारण देवनागरी के ही समान हैं। इस कारण इसे सरलता से लिप्यान्तरित किया जा सकता है।
नेपाली तथा नेपाल में बोली जाने वाली अन्य भाषाएं, तामाड भाषा, बोडो, संतिली आदि देवनागरी मे लिखीं जाती हैं।
इसमें १४ स्वर और ३८ व्यंजन हैं। कुल ५२ अक्षरों की वर्णमाला को इस प्रकार व्यवस्थित किया गया है कि इसका उच्चारण और लेखन अत्यधिक वैज्ञानिक बन पड़ा है। स्वर व्यंजन, कोमल कठोर, अल्पप्राण महाप्राण, अनुनासिक्य अन्तस्थ उष्म इत्यादि। देवनागरी लिपि लिखने में सरल, पठन की दृष्टि से सुपाठ्य, और सुंदर लिपि है।
रोमन लिपि की अपेक्षा देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं को अधिक वैज्ञानिक रूप से लिखने में सक्षम है। रोमन लिपि में वो वर्ण नहीं हैं जो भारतीय भाषाओं में प्रयुक्त होने वाले महाप्राण का उच्चारण इकाई के रूप में होता है और रोमन लिपि में इकाई के रूप में लिखने के लिए वर्ण नहीं हैं। तमिल भाषा को छोड़कर अन्य सभी भारतीय भाषाओं में अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन विषम वितरण में वितरित हैं। दूसरे शब्दों में कहें तो इनका ध्वनिक महत्व है।

इनको इकाई के रूप में लिखने की व्यवस्था रोमन लिपि में नहीं है। परन्तु देवनागरी लिपि में इन्हें सुगमता पूर्वक लिखा जा सकता है। देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं को संगत, प्रकृति के अनुरूप और वैज्ञानिक ढंग से लिखने में समर्थ है। (प्रोफेसर महावीर सरन जैन १९६०)

देवनागरी लिपि को सीखना और सिखाना दोनों ही सरल और सहज है। इसके विभिन्न वर्णों में अर्थभेदक शक्ति है। यदि परम्परागत देवनागरी लिपि में किंचित संशोधन किया जाए तो अन्य प्रमुख भारतीय भाषाओं को इसमें लिपिबद्ध किया जा सकता है। जैसे उर्दू, पंजाबी, कश्मीरी, उड़िया, मलयालम, कन्नड़, तेलगु, तमु, गुजराती, बांग्ला।

देवनागरी लिपि में उर्दू के आगत वर्णों को (क़ को, ग़, ज़, फ़) स्वीकार किया गया है। हिंदी और उर्दू का रूप अद्वैत है, इस विषय पर कोई मतभेद नहीं है।

देवनागरी लिपि की विशेषताएं और क्षमताएं

१) देवनागरी लिपि में वर्णमाला का वर्गीकरण अत्यंत संगत और वैज्ञानिक ढंग से किया गया है।

मूल वर्णमाला

स्वरंत

अ आ इ ई ई ऊ ऋ ए ऐ ओ औ

विदेशी भाषाओं से आगत स्वर – ऑ

अनुस्वार ं

विसर्ग ः

परम्परागत रूप से देवनागरी लिपि में व्यंजन वर्ण को अन्तर निहित स्वर वर्ण 'अ' के साथ लिखा जाता है।

जैसे 'क' वर्ण। इसमें दो ध्वनियां हैं, (क् + अ = क)

अकेले व्यंजन ध्वनि को प्रदर्शित करना अभीष्ट हो तो हल् चिन्ह को प्रयोग करते हैं।

उदाहरण स्वरुप क्

'अ' के अतिरिक्त अन्य स्वरों को उनकी मात्रा के साथ लिखा जाता है।

उदाहरण स्वरुप

क् + आ = का

क् + इ = कि

क् + ई = की

क् + उ = कु

क् + ऊ = कू

क् + ए = के

क् + ऐ = कै

व्यंजन वर्ण

पारम्परिक रूप से देवनागरी लिपि में व्यंजन वर्ण को अन्तर्निहित अ स्वर के साथ लिखा जाता है। जहां व्यंजन वर्ण को हलन्त के साथ लिखना अति आवश्यक समझा जाता है वहीं उसे हलन्त के साथ लिखते हैं।

(क्) स्पर्श, स्पर्श- संघर्षी, नासिक्य व्यंजन:

कोमल तालु स्थान क ख ग घ ङ

तालु स्थान च छ ज झ ञ र्य

मूर्धा स्थान ट ठ ड ढ ण

दाँत स्थान त थ द ध न

ओंठ स्थान प फ ब भ म

(ख) संघर्षी व्यंजन

तालव्य संघर्षी श

मूर्धन्य संघर्षी ष

वत्स्य संघर्षी स

स्वरयंत्रयी संघर्षी ह

अनुस्वार (ं)

विदेशी भाषाओं से आगत ख़, ज़, फ़

अन्य व्यंजन

वत्स् र्य लुंठित र

वत्स् र्य पार्श्विक ल

मूर्धन्य उत्क्षिप्त ड़, ढ़

तालु अर्ध स्वर य

दन्त्योष्ठ अर्ध स्वर व

संयुक्त अक्षर क्ष, त्र, ज्ञ, श्र

(२) यदि अंग्रेज़ी भाषा पर ध्यान दिया जाए तो स्पष्ट होगा की तुलनात्मक रूप से देवनागरी लिपि उत्तम है। A अक्षर का उच्चारण सुना जाए तो वो है: ए, अ, आ, औ, ऐ। वहीं देवनागरी लिपी में आ अक्षर का उच्चारण आ ही है। इस उदाहरण से स्पष्ट है की देवनागरी लिपी के लिपिचिन्हों के नाम उनके उच्चारण के अनुरूप ध्वनियों पर आधारित है। यथा कंठव्य/ कोमल तालु, मूर्धन्य, तलव्य, दंत्य, ओष्ठाय। प्रत्येक वर्ण का उच्चारण उसके ध्वन्यात्मक रूप से कमोबेश मिलता जुलता ही है।

(३) ष् तथा ऋ का ध्वनयात्मक रूप लगभग विलुप्त हो चुका है। ष् को श् की भांति ही उच्चारित करा जाता है। जो शब्द संस्कृत भाषा के हैं उनमें ष् का उच्चारण ष् ही है तथा राष्ट्र, षटकोण, भाषा। ऋ कि उच्चारण लिए हो गया है। ऋ से प्रारंभ होने वाले शब्दों में ऋ का उच्चारण ऋ ही रहता है, तथा ऋषि, ऋण, ऋतु। शब्द के मध्य में ऋ की मात्रा को (ृ) के रूप में लिखने का प्रचलन है, तथा स्वीकृति, अनुकृति,।

(४) देवनागरी लिपि में लिपि चिन्ह भाषा की ध्वनिमिक व्यवस्था की ध्वनियों का लिपयंकन करते हैं। हिंदी भाषा चूंकि अरबी भाषा, फ़ारसी भाषा, और उर्दू भाषा बोलने वाले वर्ग में भी प्रचलित है और उनके द्वारा प्रयुक्त को और ग़ का उच्चारण भी हिन्दी में मान्य हो गया है। यद्यपि को, जो और फ़ की भांति ये प्रचलित नहीं है।

(५) देवनागरी लिपि में प्रयुक्त लिपि चिन्ह दीर्घ और ह्रस्व स्वर को लिपिबद्ध करने में सक्षम हैं। व्यंजनों में भी अघोष एवं सघोष और अल्पप्राण एवं महाप्राण के लिए अलग-अलग लिपि चिन्ह हैं।

(६) हिंदी में अघोष और सघोष ध्वनि के भेद के कारण अर्थ भेद हो सकता है। इस दृष्टि से देवनागरी लिपि अघोष एवं सघोष व्यंजनों के लिए अलग-अलग लिपि चिन्ह प्रदान करने में सक्षम है।

यथा:

क और ग

ख और घ

च और ज

छ और झ

ट और ड

ठ और ड

त और द

थ और ध

प और ब

फ और भ

(७) देवनागरी लिपि में अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजनों के लिए अलग-अलग लिपि चिन्ह हैं। दूसरी ओर रोमन लिपि में इनके लिए अलग-अलग लिपि चिन्ह नहीं हैं। लगभग सभी भारतीय भाषाओं में अल्पप्राण और महाप्राण व्यंजन मिलते हैं। (तमिल भाषा को छोड़कर)। ये अल्पप्राण और महाप्राण ध्वनिम है। देवनागरी लिपि में इन्हें इकाई में लिखने की व्यवस्था है

जो रोमन लिपि चिन्ह में नहीं है। रोमन में इन्हें अल्पप्राण व्यंजन के साथ 'h' **लिपिचिन्ह के साथ जोड़ कर ही व्यक्त किया जा सकता है। कुछ पाश्चात्य विद्वानों ने ध्वनिक विवेचन करते समय महाप्राण ध्वनियों को अल्प प्राण ध्वनि +एच के गुच्छे में मानने का सुझाव दिया है।**
यथा ख का विश्लेषण क्+ह् के गुच्छे के रूप में किया गया है।
प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने इस सिद्धांत को खण्डित किया है। उन्होंने स्पष्ट किया कि " अभिरचना अन्विति तथा उच्चारण दोनों दृष्टियों से हिन्दी में महाप्राण ध्वनियों का अल्पप्राण ध्वनियों व्यतिरेकी वितरण है और इनका उच्चारण गुच्छे नहीं अपितु इकाई के रूप में होता है। "
गुच्छे के रूप में लिखने का सिद्धांत अतार्किक, असंगत और अवैज्ञानिक था। हाकेट के १९५५ में दिए गए इस मत को पश्चिम में भी अधिक समर्थन नहीं मिला। ग्लसीन ने १९६१ में हिन्दी भाषा के संदर्भ में २० स्पर्श व्यंजनों की सूची घोषित की। जिसमें महाप्राण ध्वनियों को ध्वनिमिक इकाई के रूप में ही स्वीकार किया गया। (ख, ई, छ, झ,, ख, ढ, थ, ध, ष्, भ,)
वस्तुत स्पर्श और स्पर्श संघर्षी महाप्राण व्यंजनों का ध्वनिक स्तर पर उच्चारण इकाई के रूप में ही होता है।
प्रोफेसर महावीर सरन जैन के अनुसार हिन्दी में स्पर्श महाप्राण व्यंजन तथा अल्प प्राण व्यंजन + ह के बीच भी व्यतिरेक की स्थिति है।

उदाहरण स्वरुप
फ् फ्ह
उफ़ान उफ्हार
घ ग्ह
सघन अग्हन
भ। ब्ह
अभी अब् ही
सभी सब् ही
तभी तब् ही

यहां यह स्वतः ही स्पष्ट है कि हिन्दी के महाप्राण व्यंजन ध्वनियों को साथ ही अन्य भारतीय भाषाओं की महाप्राण व्यंजन ध्वनियों को देवनागरी लिपि में ही संगत और वैज्ञानिक ढंग से लिखा जा सकता है।
रोमन लिपि में इन्हें सुगमता से लिखने के लिए अलग-अलग इकाई वर्ण नहीं हैं।
याद रहे हिंदी में अल्प प्राण और महाप्राण के आधार पर अर्थ भेद हो जाता है।

यथा :
कान: खान ; काल: खाल ;
गोल: घोल ; गिरा: घिरा ;
चल: छल ; मचली: मछली ;
जाग: झाग ; जर्जर: झरझर
डाल: ढाल ; ताप: धाप
दान: धान ; ताल: थाल ;
पल: फल ; कप: कफ
बाग: भाग ; बुलाया: भुलाया

(८) हिंदी में दाँतों और मुर्धा से बोले जाने वाले वर्ण व्यतिरेकी हैं। देवनागरी लिपि में इनके लिए अलग-अलग वर्ण और चिन्ह हैं।
त और ट ताल टाल
थ और ठ थाली ठाली
द और ड दाल ढाल

(९) हिन्दी में कोमल तालु, नासिक्य, तालु स्थान से उच्चारण किए जाने वाले अलग-अलग वर्ण हैं।
यथा: ङ, ण, ञ, न

(१०) हिंदी में दन्त्य संघर्षी, तालव्य संघर्षी और मूर्धन्य संघर्षी स न, ष के लिए अलग-अलग वर्ण हैं। ये वर्ण इन्हें इकाई के रूप में व्यक्त करते हैं।

(११) हिंदी में 'ह' सघोष संघर्षी काकल्य व्यंजन और (ः) अघोष संघर्षी कार्य विसर्ग के लिए अलग-अलग वर्ण हैं।

(१२) हिंदी में अनुनासिकता का ध्वनिमिक महत्व है। निरुनुनासिका स्वरों को अनुनासिका रूप में बोलने से व्यतिरेक हो जाता है।

उदाहरण स्वरुप
सास सांस
बास बांस
कांटा काँटा
ई ईं
ऊ ऊँ
पूछ पूंजी

व्यवहारिक कारणों से शिरोरेखा के ऊपर जुड़ने वाली मात्रा के साथ (ँ) चन्द्र बिन्दु के स्थान पर केवल बिंदु (अनुस्वार ं चिन्ह) का प्रयोग प्रचलित हो गया है।
अनुस्वार कोई व्यंजन ध्वनि नहीं है। यह पंचाक्षर को व्यक्त करने के लिए लेखन का तरीका है। (ङ, ञ, ण, न, म,)।
उपरोक्त विवेचन से स्पष्ट है कि देवनागरी लिपि भारतीय भाषाओं की ध्वनिमिक व्यवस्था अधिक वैज्ञानिक ढंग से लिखने में समर्थ और सक्षम है। किसी भी भाषा लिपि के लिए यह मान्य है कि वह अपनी भाषा की ध्वनियों को व्यक्त करने में सक्षम हो और समर्थ हो।
देवनागरी लिपी बाएं से दाएं लिखी जाती है।
प्रत्येक वर्ण के ऊपर एक रेखा खींची जाती है। कुछ वर्णों के ऊपर रेखा नहीं खींची जाती है। इसमें शिरो रेखा कहा जाता है।
उर्दू के अनेक लिखने वाले देवनागरी लिपि का प्रयोग करते है। इस लिपि में विश्व की समस्त भाषाओं की ध्वनियों को लिप्यांतरित किया जा सकता है। इस लिपि में संसार की किसी भी भाषा को लिपिबद्ध करने की क्षमता है। देवनागरी लिपी की समर्थता, सक्षमता और वैज्ञानिकता आश्चर्य में डाल देती है।

देवनागरी लिपी में अनन्य गुण हैं:
यथा एक ध्वनि: एक सांकेतिक चिन्ह
स्वर और व्यंजन में तर्क संगत और वैज्ञानिक क्रम विन्यास।
वर्णों की पूर्णता एवं संपन्नता। ५२ वर्ण, न बहुत अधिक न बहुत कम।
यह तो पहले भी कहा जा चुका है कि यह उच्चार और लेखन में एक रूप है।
साथ ही साथ इसके लेखन और मुद्रण में भी एक रुपता है। वहीं दूसरी ओर देखा जाए तो रोमन अरबी और फारसी का हस्तलिखित और मुद्रित रूप अलग अलग है।
देवनागरी लिपि सर्वाधिक चिन्हों को व्यक्त करने में सक्षम है। लिपी चिन्हों के नाम और स्वर में कोई अंतर नहीं है जैसा की रोमन अक्षर में है। जैसे रोमन में अक्षर का नाम डी है और ध्वनि ड है।
इसमें मात्राओं का प्रयोग सहज और सुगम है। साथ ही अर्ध अक्षर के रूप की सुगमता भी है।
आचार्य विनोबा भावे ने कहा था कि "हिंदुस्तान की एकता के लिए हिंदी भाषा जितना काम देगी, उससे अधिक काम देवनागरी लिपि दे सकती है।"
सर विलियम जोन्स का विचार था कि देवनागरी किसी भी लिपि की तुलना में अधिक वैज्ञानिक और व्यवस्थित लिपि है।
वहीं जॉन क्राइस्ट कहते है कि मानव मस्तिष्क से निकली हुई वर्णमालाओं में नागरी लिपि सबसे अधिक पूर्ण वर्णमाला है।
खुशवंत सिंह के मतानुसार उर्दू लिखने में देवनागरी अपनाने से उर्दू उत्कर्ष को प्राप्त होगी।

एम.सी.छागला का कहना था कि एक सर्वमान्य लिपि स्वीकार करने से भारत की विभिन्न भाषाओं में जो ज्ञान का भंडार भरा है उसे प्राप्त करने का एक साधारण व्यक्ति को सहज ही अवसर प्राप्त होगा। हमारे लिए यदि कोई सर्व-मान्य लिपि स्वीकार करना संभव है तो वह देवनागरी है।

प्राचीन काल से ही नागरी लिपि हर संदर्भ में उपयुक्त रही है। इसका लचीलापन इसे हर ढांचे में आसानी से ढलने देता है। समस्त प्राचीन भारतीय भाषाओं - संस्कृत, प्राकृत, पाली एवं अपभ्रंश में भी देवनागरी लिपि ही प्रयोग होती है।

देवनागरी लिपि के विकास में सी-डैक द्वारा प्रमुख कार्य किया गया है। भारत की मुख्य भाषाओं के लिए "इण्डियन स्टैंडर्ड कोड ऑफ इन्फोर्मेशन इन्टरचेन्ज" संक्षेप में इस्की नामक मानक कोड निर्मित करने के सम्बन्ध में ध्यान देना भी अनिवार्य है। इसके कारण हिन्दी को भी यूनिकोड मिल गया है। यूनिकोड के कारण देवनागरी लिपि को आज के समय में गति मिल गई है।

संदर्भ

1. wikibooks.org भारत के लिए देवनागरी का महत्त्व (१५ अप्रैल २०१७)
2. Wikipedia.org नागरी एवं भारतीय भाषाएं (५ मार्च २०२०)
3. bharartdiscovery.org
4. महावीर प्रसाद जैन का आलेख भारतीय भाषाएं और देवनागरी लिपि www.rachnakar.org
5. हिन्दीः स्वरूप एवं वर्तनी: (प्रकाशित मन, वर्ष 2, अंक 2, दिल्ली, पृष्ठ 11-14, जुलाई, 1975)
6. देवनागरी लिपि एवं हिन्दी की वर्तनी: क्षमताएँ, सीमाएँ, वैज्ञानिकता एवं समस्याएँ, नागरी लिपि सम्मेलन स्मारिका, नागरी लिपि परिषद्, राजघाट, नई दिल्ली, पृ0 41-46 (अप्रेल, 1977)
7. http://prabhasakshi.com/ShowArticle.aspx?ArticleId=120502-125738-440010
8. देवनागरी लिपि एवं हिन्दी की वर्तनी: नागरी लिपि सम्मेलन स्मारिका, नागरी लिपि परिषद्, राजघाट, नई दिल्ली, पृ. 41-46 (अप्रेल, 1977)